Q. कॉम्टे के तीन स्तरों के नियम' सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। (Critically analyse 'Law of three stages' of Comte)

Ans सामाजिक विचारधारा के क्षेत्र में कॉम्टे का 'तीन स्तरों का नियम' इनका एक महत्वपूर्ण योगदान है, सन 1822 में जब वे केवल 24 वर्ष के थे तभी उन्होंने इस नियम का प्रतिपादित किया था। यह नियम कॉम्ट के समाजशास्त्र का आधार है। अतः इनकी व्याख्या आवश्यक है। इस नियम के अनुसार सामाजिक विकास का अध्ययन मानव के बौद्धिक विकास के स्तर के आधार पर किया जा सकता है। मानव के बौद्धिक विकास को कॉम्टे ने तीन अवस्थाओं में विभाजित किया है — (1) धार्मिक स्तर (2) तात्विक स्तर (3) प्रत्यक्ष या वैज्ञानिक स्तर। कॉम्ट लिखते हैं कि "हमारी प्रत्येक प्रमुख विचारधाराएं, हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा, एक के बाद एक तीन विभिन्न सैद्धान्तिक अवस्थाओं से होकर गुजरती है, धर्मशास्त्रीय या काल्पनिक; तात्विक या अमूर्त या व वैज्ञानिक या प्रत्यक्षवादी अवस्था।" ये तीन अवस्थाएं इस प्रकार है —

(1) धार्मिक या काल्पनिक अवस्था (स्तर) — इस अवस्था में समाज की सभी घटनाओं की व्याख्या धार्मिक आधार पर की जाती है। मनुष्य प्रत्येक घटना के पीछे किसी न किसी अलौकिक शक्ति की कल्पना करता है। मनुष्य यह मानता है कि कोई भी घटना अलौकिक शक्ति की क्रिया का ही परिणाम है।

(2) तत्व दार्शनिक या अमूर्त अवस्था (स्तर) — यह अवस्था धार्मिक और वैज्ञानिक अवस्था के बीच की है। मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ मनुष्य की तर्क शक्ति बढ़ती गई। और इस अवस्था में मनुष्य यह सोचने लगा कि प्रत्येक घटना के पीछे ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं होता वरन् अमूर्त स्वरूप में सभी जगह विद्यमान होता है और मनुष्य संसार में जो कुछ भी घटित होता है उसकी व्याख्या ईश्वर के आधार पर नहीं वरन् उद्देश्य या निराकार शक्ति के आधार पर करता है।

(3) प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक अवस्था — इस अवस्था में मानव

Kajol

मस्तिष्क धार्मिक और काल्पनिक विचारों को छोड़कर घटनाओं की व्याख्या तर्क और वैज्ञानिक आधार पर करता है। इस अवस्था में मनुष्य का मस्तिष्क तर्क और निरीक्षण एवं वर्गीकरण के आधार पर घटनाओं एवं तथ्यों का ज्ञान का ख्याल करता है। क्योंकि घटनाओं को समझने का यही वास्तविक निर्णय योग्य साधन है। इस स्तर पर ज्ञान का संग्रह ही अत्यंत महत्वपूर्ण और एकमात्र उद्देश्य होता है। वैज्ञानिक नियमों का निर्माण इसी स्तर में संभव है और इन्हें समस्त घटनाओं पर लागू किया जाता है।

कॉम्ट कहते हैं कि उक्त तीन अवस्थाओं का सिद्धांत व्यक्ति, समाज एवं बौद्धिक तथा सामाजिक जीवन पर लागू होता है अर्थात यह सभी इन तीनों अवस्थाओं से होकर गुजरती है विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का विकास भी इन्हीं स्तरों से हुआ है।

कॉम्ट के चिन्तन की तीनों अवस्थाओं का सम्बंध सामाजिक संगठन से जोड़ा और कहा कि चिन्तन के प्रत्येक स्तर में सामाजिक संगठन का भी एक विशेष स्तर पाया जाता है। दूसरे शब्दों में, चिन्तन की प्रत्येक अवस्था एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक संगठन का प्रतिनिधित्व करती है जो इस प्रकार हैं:-

(1) धार्मिक या काल्पनिक अवस्था में सामाजिक संगठन को भी ईश्वरीय इच्छा का प्रतिरूप माना जाता है। समाज की उत्पत्ति और अस्तित्व के लिए ईश्वर की इच्छा को ही आधार माना जाता है। राजनीतिक सत्ता को ईश्वरीय आधार पर स्वीकार किया जाता है। राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है। अतः धरती पर ईश्वर के बाद राजा का ही स्थान है, जो ईश्वर की ओर से समाज पर शासन करता है। अतः इसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करना ईश्वरीय इच्छा को मानना है और कानून का उल्लंघन, दैवी शक्ति का विरोध माना जाता था जिसके लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था थी। इस अवस्था में अन्धविश्वासों का महत्वपूर्ण स्थान है।

(11) तात्विक स्तर पर राजनीतिक सत्ता अमूर्त अधिकारों के सिद्धांतों पर आधारित होती है। इस अवस्था में दैवीय अधिकारों की समाप्ति हो जाती है और उसके स्थान पर प्राकृतिक अधिकारों को अपनाया जाता है जो कि मनुष्य के राजनीतिक सम्बंधों को निश्चित करते हैं। इस अवस्था में सामाजिक संगठन

का वैधानिक पहलू विकसित होने लगता है, राजा की निरंकुश सत्ता हट जाती है और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचार जोर पकड़ने लगते हैं। समाज में पुरोहितवाद का विकास होने लगता है, राजा के अधिकारों में कमी आने लगती है और उसके स्थान पर जनता की प्रभुसत्ता के बीज पनपने लगते हैं।

(III) वैज्ञानिक अथवा तथ्यवादी स्तर में समाज का वैज्ञानिक विकास होने लगता है। इस समय औद्योगिक विकास होने लगता है और घटनाओं की व्याख्या वैज्ञानिक प्रणाली के आधार पर की जाती है। विभिन्न प्रकार के प्रयोग और अनुसंधान किए जाते हैं। विज्ञानों की सहायता से प्राकृतिक शक्तियों का अधिकाधिक उपयोग हो सकता है, अनेक अनुसंधान और अन्वेषण होने लगते हैं। इस स्तर में मानवता के धर्म का विकास होता है तथा समाज में बौद्धिक तथा नैतिक शक्तियों का उत्तम समन्वय पाया जाता है। मानव सभ्यता के विकास का यह श्रेष्ठतर स्तर है।

समाप्त